Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

प्रेमचंद की कहानियों में दलित किसान

प्रियंका बी. जवंजाल
शोधार्थी, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड, केरल
Email: priyankajcuk@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180107
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 29-31
January - 2026
Submitted: 15 Dec. 2025
Revised: 25 Dec. 2025
Accepted: 10 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

शोध सार

हिन्दी साहित्य में हमें दलित भूमिहार किसान कम ही दिखाई पड़ते है। इसका मुख्य कारण है सामंतवादी व्यवस्था और जातिगत भेदभाव। जहां एक ओर वर्ण व्यवस्था ने दलितों को समाज में सबसे निचले स्तर पर रखा, वहीं सामंतवाद ने उन्हें कभी मजदूर से खेतिहर किसान बनने ही नहीं दिया। दलित किसानी में भूमिहीन किसान या खेतिहर मजदूर वर्ग का हिस्सा है जिसके पास ना जमीन है ना साक्षरता और ना ही जीवन यापन का कोई और तरीका उन्हें मालूम है, वे एक छोटे से जमीन के टुकड़े के सहारे जीते है। प्रेमचंद के हिन्दी साहित्य के सबसे प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार और विचारक थे। प्रेमचंद के प्राप्त साहित्य में उन्होंने कुल 298 कहानियाँ लिखी जिनमें से केवल 40 दलित जीवन पर आधारित रही। ऐसी ही एक कहानी है 'बाँका ज़मींदार' इस कहानी में ज़मींदार और बंजारे किसानों का सीधा संघर्ष है। इस कहानी में ज़मींदार के गुंडों को बंजारे किसान पराजित कर देते है और ज़मींदार खुद अपनी ज़मींदारी का अधिकार छोड़ देता है। 'खून सफ़ेद' नामक कहानी में अकाल और भूख से पीड़ित हिन्दू किसान का बेटा साधो जब बिस्किट और केले के मोह में पादरी के पीछे चल जाता है और चौदह वर्ष बाद पादरी बन कर लौटता है तब हिन्दू समाज उसे अछूत मानता है, और उसे वापस पादरी समाज में लौट जाने पर मजबूर कर देता है। 'पशु से मनुष्य' यह कहानी एक माली की है जिसका नाम दुर्गा है जिसे चोरी के अपराध में निकाल दिया जाता है। किन्तु जब वह प्रेमशंकर की सहकार्य की व्यवस्था का हिस्सा बन जाता है तब वह भी मनुष्य के गुणों को दर्शाने लगता है। यदि व्यवस्था और स्वामित्व बदले तो पशु समान माली भी मनुष्य बन सकता है। 'सवा सेर गेहूँ' एक ऐसी कहानी है जिसमे एक गरीब किसान है और वह सवा सेर गेहूँ के चक्कर में सर जीवन गुलामी करता है और मरने के बाद भी उसे इस गुलामी से आज़ादी नहीं मिलती बल्कि उसका पुत्र पिता द्वारा लिए गए ऋण को उतारने पर मजबूर हो जाता है। 'शूद्रा' कहानी गौरा शूद्र की है, गौरा और उसके पति को एक बूढा ब्राह्मण धोखे से मजदूर की तरह मॉरिशियस भेज देता है। वहाँ जा कर गौरा का पति उस पर शक करता है जिस कारण वह नदी में कूद कर अपनी जान दे देती है और उसके पीछे पीछे उसका पति भी नदी में कूद कर अपना जीवन समाप्त कर देता है। और अन्य की कहानियाँ है – 'पूस की रात', 'घासवाली', 'कफ़न', ठाकुर का कुआं', 'सद्गति', 'प्रेम का उदय', आदि।

बीज शब्द: *दलित किसान, कहानी, प्रेमचंद।*

उद्देश्य

प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानियों में दलित किसानों की स्थिति और उनकी समस्याओं को उजागर करना।

भूमिका

किसान हमेशा से भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव रहे है, किन्तु 31 मई 2021 को सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा जारी राष्ट्रीय आय के वार्षिक अंतिम अनुमान के अनुसार, 2020-21 में कुल अर्थव्यवस्था में कृषि और संबद्ध क्षेत्र के जीडीपी का 20.2 प्रतिशत हिस्सा रहा, जो एक उन्नति की ओर अग्रसर राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रियंका बी. जवंजाल, शोधार्थी, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड, केरल

How to cite this article:
जवंजाल, . प्रियंका . बी . (2026). प्रेमचंद की कहानियों में दलित किसान. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 29–31. https://doi.org/10.5281/zenodo.18595971

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18595971
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

किसान का अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जिसके जीवन यापन का माध्यम कृषि या जीव पालन है।किसान के पास अपनी जमीन भी हो सकती है या फिर वे दूसरों की जमीन पर मजदूरी भी कर सकते है। दलित विमर्श और किसान विमर्श आपस में उलझे हुए हैं क्योंकि एक बड़ी संख्या में दलित आबादी किसानी से जुड़े कामों में लगी हुई हैं। दलित का शाब्दिक अर्थ है जिसका दलन हुआ हो, और भारतीय समाज के संदर्भ में यह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिनको समाज के एक विशिष्ट वर्ग ने सुनियोजित ढंग से समाज में निम्न बना दिया। मनुष्य होते हुए भी उनके साथ पशुओं से बदतर व्यवहार किया और एक योजनाबद्ध तरीके से उनके सम्पूर्ण मानवाधिकारों का हनन किया। किन्तु दलित शब्द में दया या सहानुभूति ना हो कर एक अधिकार का भाव निहित है जो दलित चेतन के मूल में है। कुछ ऐसा ही शोषण और दलन हमें प्रेमचंद की दलित किसान विषयक कहानियों में भी दिखता है। प्रेमचंद के दलित लेखन में भले ही स्वानुभूति ना हो पर वह दलित साहित्य के विकास में ग़ैर दलित लेखन का बखूबी प्रतिनिधित्व करता है, उनके लेखन में दलित किसान जीवन और शोषण का सजीव चित्रण हमें दिखाई देता है।

चूंकि दलित वर्ग के स्वामित्व में भूमि कम ही आयी है इसलिए हमें प्रेमचंद की कहानियों में भी उनके भूमिहर दलित किसान दिखाई नहीं पड़ते और जिनके पास जमीन है भी वे अपनी अशिक्षा के कारण कर्ज के कुचक्र में फँसते दिखाई देते हैं। जैसे 'सवाँ सेर गेहूं' कहानी में शंकर खेतिहर किसान से मजदूर बन जाता है और विप्र महाजन की कपट नीति के कारण आखिर में बंधुआ मजदूर बन जाता है और जब फिर भी उसका कर्ज नहीं उतरता तो उसकी मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र को भी विप्र महाजन के यहाँ बंधुआ मजदूर बन कर रहना पड़ता है। इस प्रकार सवाँ से गेहूं एक दलित किसान के परिवार के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी शोषण का सबब बन जाते हैं।

"उसने समझ लिया की जब इतना कष्ट सहने पर भी साल-भर में 60 रुपए से अधिक न जमा कर सका, तो अब कौन सा उपाय है जिसके द्वारा इसके दूने रुपये जमा हों। जब सिर पर ऋण का बोझ ही लादना है तो क्या मन-भर का और क्या सवा मन का। उसका उत्साह क्षीण हो गया, मेहनत से घृणा हो गई"। 'सवाँ सेर गेहूं' में लिखे गए ये वाक्य हमें 'कफ़न' कहानी की ओर ले जाते है जहां घीसू और माधव में भी हमें इसी प्रकार की निराशा देखने को मिलती है, जो इस व्यवस्था के अत्याचार और शोषण के कारण जीवन से निराश हो चुके हैं, उन्हें मेहनत करने में रस नहीं रहा क्योंकि उन्हें पता है की उनकी मेहनत का लाभ उन्हें कभी नहीं मिलेगा। "घीसू खड़ा हो गया और जैसे उल्लास की लहरों में तैरता हुआ बोला "हाँ बेटा, वैकुंठ में जाएगी। किसी को सताना नहीं, किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी की गई। वह न वैकुंठ में जाएगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जाएंगे, जो ग़रीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं।" कफ़न कहानी में मौजूद यह संवाद हमें घीसू और माधव के हृदय में मौजूद निराशा का प्रमाण देते हैं।

'मंदिर' कहानी में सुखिया एक विधवा दलित स्त्री है जो घास छीलकर अपने और अपने पुत्र जियावन का पेट पालती थी। पति की मृत्यु के बाद यह बालक ही उसका एक मात्र सहारा था। जब उसका पुत्र अज्ञात कारणों वश बीमार पड जाता है तो उसके पति स्वप्न में आ कर उसे ठाकुर जी की पूजा करने का संकेत करते है, जिसपर वह मन्नत मांगती है की यदि उसका पुत्र ठीक हो जाता है तो वह ठाकुर जी की पूजा करेगी। उसका विश्वास था की पूजा करने से उसका पुत्र ठीक हो जाएगा। पर पुजारी व गाँव के अन्य लोग उसे ऐसा करने नहीं देते और उसका बालक दम तोड़ देता है, जिसपर सुखिया के भी प्राण निकल जाते है। "पापियों, मेरे बच्चे के प्राण ले कर दूर क्यों खड़े हो? मुझे भी क्यों नहीं उसी के साथ मार डालते? मेरे छू लेने से ठाकुरजी को छूत लग गई? पारस को छू कर लोहा सोना हो जाता है, पारस लोहा नहीं हो सकता। मेरे छूने से ठाकुरजी अपवित्र हो जाएंगे! मुझे बनाया, तो छूत नहीं लगी?" यह संवाद हमें जाती व्यवस्था के उस सत्य से वाकिफ कराता है, जहां अस्पृश्यता किसी बालक के जीवन-मरण के प्रश्न से भी महत्वपूर्ण है।

'सद्गति' कहानी दुखी नाम के चमार की है, इस कहानी का चित्रण प्रेमचंद इतनी मार्मिकता से करते है कि एक-एक पात्र सजीव हो उठता है। कहानी की शुरुआत में यह स्पष्ट हो जाता है कि दुखी और उसकी पत्नी दोनों ही कृषि मजदूर है और चौतरफा शोषण के शिकार है। जब दुखी पंडित को पुत्री की सगाई का न्योता देने जाता है तो पंडित उससे दिन भर काम करवाता है और काम करते-करते दुखी मर जाता है, लाश कोई नहीं उठाता। आखिर पंडित उसके पैर बांधकर उसकी लाश को घसीटते हुए उसकी लाश को फेंक आता है।

'बांका जमींदार' कहानी में ठाकुर प्रद्युम्न सिंह जब एक जमींदार को मज़दूर के कत्ल के इल्जाम से, जिसको उस जमींदार ने जेठ की जलती धूप में दिन-भर खड़ा किया था, बा-इज्जत बारी करवाते है। तब वह आभार स्वरूप एक वीरान मौज़ा ठाकुर साहब को भेट करता है। उस मौजे के लोगों पर ठाकुर साहब खूब ज़ुल्म ढाते है, उनके ज़ुल्म की बदौलत वह मौज़ा दो बार वीरान हो चुका था। तब वहाँ बंजारों का एक काफिला आया और उन्होंने उस वीरान गाँव को आबाद कर दिया। जब ठाकुर साहब पुनः अपनी रियासत देखने गये तो वहाँ भी बाज ना आए और फिर उन बंजारों को वहाँ से जाने का हुकूम सुनाने लगे। पर बंजारे बहादुर थे, उन्होंने ठाकुर के आदमियों को ऐसी धूल चटाई की आखिर ठाकुर ने अपना अधिकार छोड़ दिया।

'खून सफेद' कहानी में जब सूखे से ग्रस्त हो कर जादोराय और देवकी अपने बेटे साधो को साथ ले कर गाँव से बाहर खाने और रोजगार की तलाश में निकलते है, तब भूख से व्याकुल साधो केले और बिस्कुट के लालच में पादरियों के पीछे चला जाता है। जब वह 14 वर्ष बाद साधो पादरी बन कर अपने माँ-बाप के पास वापस लौटता है, तो गाँव वाले उसके माता-पिता को आदेश देते हैं की वो अपने पुत्र से छूआछूत का व्यवहार करे। जिसको सुन साधो वापस लौट जाने पर मजबूर हो जाता है। यहाँ छूआछूत की समस्या धर्म परिवर्तन से उत्पन्न होती दिखाई देती है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

'प्रेम का उदय' कहानी में भोंदू और बंटी कंजड़-दंपति हैं। यह समाज मुख्यतः पशु पालन और चोरी-चकारी से अपना घर चलाते हैं। पर भोंदू को यह नामंजूर है, वह घास छीलकर घर चलाना ज्यादा पसंद करता है। दूसरी तरफ बंटी को भौतिक सुख की आशा है, उसे नई गुलाबी साड़ी चाहिए, पान, फूलों के गजरे, साबुन, उबटन, अलसी का लुआब, सब चाहिए, किन्तु भोंदू की ईमानदारी उसके सपनों के आड़े आती रहती है। आखिर वह भोंदू को छोड़कर दूसरे पुरुष से विवाह करने की धमकी देती है। इस बात को सुनकर भोंदू चोरी करने को मजबूर हो जाता है। विडंबना यह है कि इंसान ईमानदारी से, मेहनत कर कभी अपनी इच्छाएँ पूरी नहीं कर पाया, पर चोरी करते ही सारे अभाव मिट जाते हैं। फिर भोंदू को पुलिस पकड़ के ले जाती है और उसे अधमरा कर देती है तब बंटी गुनाह कबूल कर लेती है और और उसकी जान बचा लेती है। तब उसके मन में भोंदू के लिए सच्चे प्रेम का उदय होता है।

निष्कर्ष

इन सब कहानियों में प्रेमचंद ने भले ही किसानों की जाति विशेष का उल्लेख नहीं किया है, पर उनके वर्णन से ये स्पष्ट है की वे दरिद्र किसान निचली जाति से ताल्लुक रखते हैं। प्रेमचंद इन कहानियों के द्वारा दलित किसान जीवन के कई पहलुओं को उजागर करते हैं, कहीं ये किसान हमें जमींदारी प्रथा से लड़ते दिखाई देते हैं, तो कहीं अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करते दिखते हैं, तो कहीं भूख और अकाल की समस्याओं से जूझते हैं, और आज भी हम किसान को कमोबेश इन्हीं परिस्थितियों से ग्रस्त होते देखते हैं। साथ ही साथ प्रेमचंद हमें इन दलित किसानों की केवल दरिद्रता ही नहीं दिखाते बल्कि उनके जीवन के अनेक पहलुओं से भी अवगत कराते है। इन खेतिहर मजदूरों के हिस्से में कोई सरकारी योजना भी नहीं आती है और ना ही उन्हें अपनी स्थिति सुधारने का कोई तरीका पता होता है। इन खेतिहर मजदूरों के हिस्से में कोई सरकारी योजना भी नहीं आती है। जिस कारण इन्हे शहरों की ओर पलायन के लिए मजबूर होना पड़ता है और वहाँ भी उनकी अशिक्षा के कारण उन्हे चंद पैसों के लिए छोटे-मोटे काम कर के गुज़ारा करना पड़ता है। जैसा की डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि- "शिक्षा बाघिन का दूध है और जो भी इसका सेवन करेगा वह दहाड़े बिना नहीं रह सकेगा।" इन दलित किसानों के लिए शिक्षा ही एक मात्र ऐसा हथियार है जो इनकी परिस्थिति को सुधार सकेगा।

संदर्भ सूची

1. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1741942
2. प्रेमचंद सम्पूर्ण दलित कहानियाँ- संपादक कमल किशोर गोयेनका